दुर्गावती से बन गई एक वीरांगना रानी

गिरिजा शंकर अग्रवाल

रानी दुर्गावती अपने नाम के अनुरूप ही दिव्य गुणों और दिव्य तेज से सुशोभित थीं। बचपन से निकलकर जैसे ही उन्होंने किशोरावस्था में पग रखा। उनके शौर्य, तेज और वीरता ने अपना रंग दिखाना आरंभ कर दिया। जब वह यौवनावस्था में प्रविष्ट हुई तो उनके क्षत्रियोचित गुणों की सुगंध दूर-दूर तक फैलने लगी। उनका विवाह गढ़मंडल (गोंडवाना) के शासक संग्रामशाह के पुत्र दलपतशाह से हुआ। अब दुर्गावती रानी हो गई थीं। गंभीरता, वीरता, धैर्य और साहस जैसे गुण तो पहले ही उनके व्यक्तित्व में कूट-कूट कर भरे थे, पर अब उन्होंने अपने आपको नई भूमिका में देखकर अपने भीतर इन गुणों का और भी अधिक विस्तार किया। पुनश्च रानी को पता नहीं था कि नियति उन्हें किस बड़ी भूमिका के लिए गोंडवाना की रानी बनाकर ले आई है। उन्होंने भी वही स्वप्न सँजोए थे, जो हर नवविवाहिता अपने नए जीवन के आरंभ में संजोया करती है–अपनी प्यारी-सी घर गृहस्थी हो, उसमें ऐश्वर्य के सभी साधन हों इत्यादि।

पुत्र नारायण का जन्म–विवाह के 1 वर्ष पश्चात् रानी को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम रानी के ससुर संग्रामशाह ने नारायण रखा। नारायण को रानी ने वे सारी सुविधाएँ देकर पालना आरंभ कर दिया जो एक राजकुमार के लिए आवश्यक और अपेक्षित हुआ करती हैं। नारायण का लालन-पालन सर्व सुविधाओं के मध्य हो रहा था और होता भी क्यों नहीं। वह संग्रामशाह के राज्य का उत्तराधिकारी था।

पति दलपतशाह का देहांत–दुर्भाग्यवश जब नारायण मात्र 5 वर्ष का ही था तो उसके पिता दलपतशाह का देहांत हो गया। रानी के लिए यह घटना वज्रपात से कम नहीं थी, परंतु उन्होंने अपने आप को सँभाला और स्वयं को भीतर से टूटने नहीं दिया। उन्होंने

अपनी भावी भूमिका का बड़े शांत मन से अध्ययन किया और यह विचार कर लिया कि यदि वह टूट गई तो गढ़मंडल का राज भी समाप्त हो जाएगा और शत्रु उन्हें और उनके वंश के लोगों को भी समाप्त कर देंगे। उन्होंने अपने जीवन के प्रश्न की जटिलता को समझा, जिसमें जर, जमीन और जन, तीनों के लिए संकट उत्पन्न होने जा रहा था। इसलिए रानी ने इन तीनों की सुरक्षा के लिए अपने जीवन को दाँव पर लगा दिया, जिससे कि प्रश्न की जटिलता का समाधान खोजा जा सके। उन्होंने अपने पुत्र नारायण जिसे वीरनारायण भी कहा जाता था कि शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण प्रबंध किया और शासन की बागडोर अपने हाथों में लेकर राजकाज चलाने लगीं।

अकबर की कोप दृष्टि–जब रानी के छोटे से राज्य की कहानी अकबर को ज्ञात हुई कि इस राज्य पर शासन करने वाली एक नारी है, तो वह हँसा और उस राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाने का मोह संवरण नहीं कर सका। उसने गढ़मंडल के रूप में थाली में रखे भोजन को देखा तो उसके मुँह में पानी आ गया। उसने इस राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाने की तैयारी आरंभ कर दी। उधर रानी अभी तक अकबर के उद्देश्यों और आशयों से पूर्णतया अनभिज्ञ थी। उन्हें यह नहीं पता था कि शत्रु क्या करने वाला है और उसकी योजना क्या है? पर जैसे ही रानी को ज्ञात हुआ कि अकबर उसके राज्य पर हमला करने के लिए बढ़ा चला आ रहा है तो शेरनी की भाँति वह अपने शत्रु की पदचापों की प्रतीक्षा करने लगी ताकि जैसे ही शत्रु की पदचाप सुनाई दे वैसे ही उसका अंत कर दिया जाए।

रानी हो गई युद्ध के लिए तत्पर–रानी अपने वंश के इतिहास से परिचित थीं। वह जानती थीं कि एक मुगल के समक्ष शीश झुकाने का अर्थ होगा संपूर्ण हिंदू जाति को लज्जित कर देना। इसलिए रानी ने मन बना लिया था कि परिणाम चाहे जो हो, स्वतंत्रता से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। मुगलों के सामने नतमस्तक होने से तो वीरगति प्राप्त करना उचित होगा। उन्हें अपने ससुर संग्रामशाह की अनेकों वीरतापूर्ण कहानियों का बोध था कि वह कितने प्रतिभाशाली और स्वाभिमानी शासक थे। अतः रानी ने निर्णय लिया कि शत्रु के सामने शीश न झुका कर उसका सामना

किए जाने में ही भलाई है, इसी से कुल-मर्यादा की रक्षा होना भी संभव है। रानी ने अपने संक्षिप्त शासनकाल में ही कुएँ, बावड़ी, मठ, मंदिर आदि बनवाकर जनहित के कई कार्य करते हुए अपनी प्रजा का मन जीत लिया था। उनकी अपनी एक प्रिय दासी थी जिसका नाम रामचेरी था। जिसे वह बहुत स्नेह करती थीं। उसके नाम पर रानी ने चेरीताल तथा अपने नाम पर रानीताल बनवाया। इसी प्रकार एक तीसरा ताल उन्होंने अाधारताल के नाम से अपने विश्वस्त दीवान आधार सिंह के नाम पर बनवाया था।

अकबर ने युद्ध का आधार तैयार किया–अकबर ने अपनी साम्राज्यवादी नीतियों का परिचय देते हुए रानी के राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाने के उद्देश्य से रानी के समक्ष प्रस्ताव रखा कि यदि वह युद्ध से बचना चाहती है तो अपने सफेद हाथी सरमन और अपने विश्वासपात्र मंत्री आधार सिंह को यथाशीघ्र उसके दरबार में भेज दे। अकबर रानी को अपनी बेगम बनाना चाहता था। उसने रानी के समक्ष ऐसी शर्त रखी थी कि जिसे रानी मानती ही नहीं और उसके न मानने पर अकबर को उसके राज्य पर आक्रमण करने का बहाना मिल जाता। हमलावर आसफ़ खाँ रानी के पास जब अकबर का यह प्रस्ताव लेकर पहुँचा तो रानी ने इसे तुरंत बड़ी निर्भीकता से अस्वीकार कर दिया। इससे अकबर स्वयं अत्यंत क्रोधित हो उठा और उसने गोंडवाना के लिए अपने एक विश्वसनीय आसफ खाँ को सेना लेकर भेजा। आसफ़ खाँ एक महिला के शासन को मिटाकर और उसे जीवित कैद कर उसे अपने बादशाह की सेवा में लाने के उद्देश्य से प्रेरित होकर एक आक्रांता के रूप में गोंडवाना की ओर चल दिया।

रानी कूद पड़ी युद्ध की ज्वाला में–रानी को जब आसफ खाँ के आक्रमण की जानकारी मिली तो उस वीरांगना ने भारतीय परंपरा का अनुकरण करते हुए बड़ी वीरता से शत्रु का सामना किया। रानी ने इतनी प्रबलता से आक्रमण का प्रतिरोध किया कि शत्रु को प्राण बचाकर भागने पर विवश कर दिया। आसफ खाँ एक विलासी व्यक्ति था, वह सोच रहा था कि रानी एक अबला है और शीघ्र ही उसके नियंत्रण में

आ जाएगी। आसफ खाँ की गिद्ध दृष्टि रानी के कोष पर थी। वह उसे लूट कर मालामाल होना चाहता था और रानी को अपने स्वामी अकबर को सौंप कर उसकी प्रशंसा का पात्र बनना चाहता था। पर उसे अत्यंत लज्जित होना पड़ा। भारत माता की एक सच्ची सुपुत्री ने उसे पहले झटके में ही दिन में तारे दिखा दिए। उसके लिए रानी की इतनी वीरता अप्रत्याशित थी कि वह निराश भी था और हतप्रभ भी।

3,000 मुग़लों की आहुति–आसफ खाँ ने रानी से मिली पराजय का प्रतिशोध लेने के लिए पुनः गोंडवाना पर आक्रमण कर दिया। इस बार उसने दुगने वेग से हमला बोला था। रानी दुर्गावती की सेना में इस बार बहुत कम सैनिक रह गए थे। रानी ने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे शत्रु का सामना किया। रानी स्वयं अपनी सेना का संचालन पुरुष वेश में कर रही थी। रानी और उनकी सेना ने अपनी स्वतंत्रता के रक्षार्थ आज मर मिटने की ठान ली थी। रानी की उपस्थिति से उनके सैनिकों में दुगना उत्साह उत्पन्न हो गया था। उन सबके लिए आज स्वतंत्रता की रक्षा ही आवश्यक नहीं थी उसके साथ-ही-साथ रानी की रक्षा भी अनिवार्य हो गई थी। क्योंकि रानी को यदि आसफ खाँ पकड़ कर ले जाने में सफल हो गया तो इससे भारत की अस्मिता ही लुट जाती। तब हमारे वीर योद्धाओं के लिए बड़ी अपमानजनक स्थिति उत्पन्न हो जानी थी। अतः जितने भी हिंदू वीर रानी के साथ थे उन सब ने अपनी वीरता का परिचय युद्ध के आरंभ होते ही देना आरंभ कर दिया। उन सब ने इस युद्ध को देश के सम्मान और नारी-शक्ति के सम्मान के लिए लड़ा। भारत में अब तक के मुस्लिम सुल्तानों या बादशाहों के साथ भारत के योद्धाओं के जितने भी युद्ध हुए थे वह वास्तव में देश के सम्मान और नारी-शक्ति के सम्मान के लिए ही लड़े गए थे। इस प्रकार नारी-शक्ति के सम्मान के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करना भारत की वीर परंपरा है इसे इतिहास में इसी प्रकार समझने की आवश्यकता है। रानी स्वयं भी बिजली की भाँति गरज रही थी। जिधर भी घुस जातीं उधर ही शवों का ढेर लगा देतीं। शत्रु कटता, मिटता और सिमटता ही जा रहा था। हमारे हिंदू वीरों ने

3,000 मुगल सैनिकों की बलि ले ली थी। 23 जून 1564 को हुए इस युद्ध में मुग़ल सेना की अपार क्षति हुई थी, आज शत्रु पुनः व्याकुल हो उठा था।

बनने लगीं विपरीत परिस्थितियाँ–अगले दिन 24 जून को युद्ध आरंभ हुआ। रानी ने अपने पुत्र वीरनारायण को इस दिन सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। उस दिन रानी के लिए विपरीत परिस्थितियाँ बननी आरंभ हो गई थीं। युद्ध में रानी बड़ी वीरता से लड़ रही थीं। अचानक एक तीर उसकी एक भुजा में आ घुसा। रानी तनिक भी विचलित नहीं हुई और उन्होंने वह तीर शीघ्र ही निकाल कर फेंक दिया। परंतु तीर के लगने और तीर निकालने में जितनी देरी हुई उसका लाभ शत्रु पक्ष ने उठाया और इससे पूर्व रानी सँभल पाती इतने में ही एक और तीर उनकी आँख में जा लगा। रानी ने बड़ी वीरता और धैर्य का परिचय देते हुए उसे भी निकाल दिया। पर कहा जाता है कि उस तीर की नोक आँख में ही धँसी रह गई। रानी अभी इस नए आघात को संभाल भी नहीं पाई थीं कि इतने में ही तीसरा तीर उसकी गर्दन में आ लगा। आधार सिंह से कहा–मेरी गर्दन काट दो–अब रानी समझ गई थीं कि उनका अंतिम समय आ गया है। वह वीर प्रसविनी थीं और स्वयं वीरांगना थीं, वीरों की नायिका थीं और वीर वेश में ही युद्ध-क्षेत्र में खड़ी भारतीय धर्म और संस्कृति की रक्षार्थ युद्ध का संचालन कर रही थीं। उन्हें यह भली प्रकार ज्ञात था कि यदि उसे आसफ खाँ कैद करके बादशाह के पास ले गया तो क्या होगा? अतः उस वीरांगना ने अत्यंत पीड़ादायी क्षणों में भी अपना धैर्य नहीं खोया और न ही शत्रु पक्ष के समक्ष किसी प्रकार की संधि का प्रस्ताव रखा। संधि शब्द तो वैसे भी उस वीरांगना के शब्दकोश में था ही नहीं। अतः उन्होंने अपने विश्वसनीय मंत्री आधार सिंह से उस समय आग्रह किया कि वह शीघ्रता से अपनी तलवार से उसकी गर्दन काट दे। रानी नहीं चाहती थीं कि उनका शरीर किसी शत्रु की तलवार से निढाल होकर धरती पर गिरे। आधार सिंह के लिए रानी का आग्रह स्वीकार करना बड़ा कठिन था। वह इसके लिए धर्म संकट में फँस गया। रानी के लिए क्षण अत्यंत असहनीय होते जा रहे थे।

अपनी कटार से ही कर लिया आत्म-बलिदान–जितने क्षण व्यतीत हो रहे थे व्यर्थ ही थे इसलिए रानी ने आधार सिंह की मनःस्थिति को समझ कर स्वयं ही निर्णय ले लिया। रानी ने अपनी कटार निकाली और उसे अपने सीने में घोंप कर स्वयं ही बलिदान दे दिया। रानी की अवस्था इस समय लगभग 40 वर्ष थी। उनका शरीर माँ भारती की गोद में आ पड़ा था। उन्होंने गिर कर भी माँ को नमन किया और माँ ने अपनी सच्ची सुपुत्री को अपने हाथों से अपना आँचल थमा दिया। रानी का बलिदान हो गया पर उनकी वीरता की ऐसी कीर्ति हुई कि आज तक भी हर हिंदू को उसके बलिदान पर गर्व है।

कह दिया था नहीं जाऊँगी युद्धभूमि छोड़कर–रानी जिस समय आसफ खाँ से युद्ध कर रही थीं। उनके साथ केवल 300 सैनिक थे। उन 300 वीरों ने 3,000 मुग़लों को काट दिया था। यह भी तो इतिहास का एक समुज्ज्वल पक्ष है कि एक हिंदू ने 10 शत्रुओं का अंत किया। हम जो गाते हैं कि 'दस-दस को एक ने मारा फिर सो गए होश गँवा के' यह वाक्य रानी के वीरों ने इस युद्ध में सार्थक कर दिया था। रानी के पुत्र वीरनारायण युद्ध में बुरी तरह घायल हो गए थे। रानी ने उन्हें सुरक्षित स्थान पर भिजवाने की व्यवस्था करा दी थी परंतु स्वयं युद्ध करती रहीं। उसके सैनिकों में से कई ने उन्हें स्वयं को भी युद्ध से हट जाने का आग्रह किया। परंतु रानी नहीं चाहती थीं कि कल को इतिहास उनके लिए यह कहे कि माता-पुत्र दोनों ही अपने प्राण बचाकर युद्ध से दूर चले गए थे। यह भारतीय इतिहास की परंपरा है कि जब युद्ध-क्षेत्र से हटना उचित माना गया तो अच्छे-अच्छे राजा युद्ध से हट गए पर जब देखा कि अब युद्ध से हटने का अर्थ होगा कायरता तो उस समय युद्ध-क्षेत्र में डटे रहकर बलिदान देना भी उचित समझा गया। रानी के लिए ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हो गई थी, इसलिए उन्होंने अपने सैनिकों के आग्रह को अस्वीकार कर युद्ध-क्षेत्र में डटे रहकर वहीं अपना बलिदान देना ही उचित समझा। उन्होंने कह दिया कि मैं युद्ध में आज विजयश्री अथवा मृत्यु में से किसी एक को लेने के लिए आई हूँ। इसलिए आज मेरे पीछे हटने का कोई प्रश्न ही नहीं है।

रानी ने दिखाई अपूर्व बहादुरी–रानी की अपनी सेना में 20,000 घुड़सवार तथा एक हजार हाथी दल के साथ-साथ बड़ी संख्या में पैदल सेना भी थी। अतः रानी ने बाज़ बहादुर के आक्रमण का बड़ी बहादुरी से सामना किया और उसे यह बता दिया कि बहादुर कहाने से बाज़ नहीं, यहाँ दुर्गा की अवतार से उसका पाला पड़ा है और दुर्गा की शक्ति को वह पराजित नहीं कर सकता। रानी ने बाज़ बहादुर को निर्णायक रूप से पराजित किया। रानी के संगठन चातुर्य और सैन्य संचालन की कीर्ति बाज़ बहादुर के हारते ही दूर-दूर तक फैल गई। इससे अकबर को बड़ी ईर्ष्या हुई। उसने रानी की वास्तविक शक्ति का पता लगाने तथा उसे अपने नियंत्रण में लेने की संभावनाओं की जानकारी लेने के उद्देश्य से अपनी राज्यसभा के 2 विद्वानों को अर्थात् गोप महापात्र तथा नरहरी महापात्र को रानी की राज्यसभा में भेज दिया। रानी ने भी अकबर के इन दोनों विद्वानों को अपने दरबार में यथोचित स्वागत-सत्कार से सम्मानित किया। अकबर ने प्रारंभ में वीरनारायण को राज्य का स्वामी मान लिया था। परंतु उसका यह भ्रम शीघ्र ही मिट गया और उसने रानी और उसके पुत्र को रास्ते से हटाकर उनके राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाने की कुत्सित योजना पर कार्य करना आरंभ कर दिया।

नारी-शक्ति की प्रतीक थी दुर्गावती–वास्तव में रानी दुर्गावती का जीवन हमें यह बताने के लिए पर्याप्त है कि यहाँ बलिदान देने के समय पुरुष समाज ही आगे नहीं आया, अपितु समय आने पर वीरांगनाओं ने भी अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने में देर नहीं लगाई। हमें अपनी ऐसी वीरांगनाओं पर हृदय से गर्व है, क्योंकि इन वीरांगनाओं के कारण ही हमारा इतिहास गौरव-गाथाओं का संगम बना। रानी की गौरव-गाथा पर भारतीय इतिहास को गर्व है, और हम उस इतिहास के पाठक हैं। ऐसे पाठक जो उस गौरव-गाथा की ज्योति को आगे लेकर चलना अपना पुनीत दायित्व समझते हैं।

बाल्यावस्था से ही शूर, बुद्धिमान और साहसी रानी दुर्गावती–रानी दुर्गावती का जन्म 5 अक्टूबर 1524 को चंदेल राजा कीर्ति सिंह तथा रानी कमलावती के गर्भ से हुआ।

बाल्यावस्था से ही शूर, बुद्धिमान और साहसी थीं। उन्होंने युद्ध कला का प्रशिक्षण भी उसी समय लिया। प्रचाप, भाला, तलवार और धनुष-बाण चलाने में वह प्रवीण थीं। गोड़ राज्य के शिल्पकार राजा संग्राम सिंह बहुत शूर पराक्रमी थे। उनके सुपुत्र वीर दलपतशाह का विवाह रानी दुर्गावती के साथ वर्ष 1542 में हुआ। राजा संग्रामशाह का निधन होने से राज्य का कार्य दलपतशाह ही देखते थे। इसी काल अवधि में उन्हें वीरनारायण नामक एक सुपुत्र भी प्राप्त हुआ।

रानी दुर्गावती ने गौड़ राजवंश की बागडोर थाम ली–दलपतशाह की मृत्यु लगभग सन् 1550 ई. में हुई। उस समय वीरनारायण की आयु बहुत अल्प होने के कारण, रानी दुर्गावती ने गणराज्य की बागडोर अपने हाथों में थाम ली। आधार सिंह कायस्थ एवं मन ठाकुर इन दो मंत्रियों ने सफलतापूर्वक तथा प्रभावी रूप से राज्य का प्रशासन चलाने में रानी की सहायता की। रानी ने सिंगौरगढ़ से अपनी राजधानी चौरागढ़ स्थानांतरित की। सतपुड़ा पर्वत से घिरे इस दुर्ग का सामरिक दृष्टि से बड़ा महत्व था। कहा जाता है कि इस काल अवधि में व्यापार बड़ा फला-फूला। प्रजा संपन्न एवं समृद्ध थी। अपने पति के पूर्वजों की तरह रानी ने भी राज्य की सीमा बढ़ाई तथा बड़ी कुशलता, उदारता एवं साहस के साथ गोंडवाना का राजनीतिक एकीकरण स्थापित किया। राज्य के 23,000 गाँवों में से 12,000 गाँव का व्यवस्थापन उसकी सरकार करती थी। अच्छी तरह से सुसज्जित सेना में 20,000 घुड़सवार तथा 10 हजार हाथी दल के साथ बड़ी संख्या में पैदल सेना भी थी। रानी दुर्गावती में सौंदर्य, उदारता, धैर्य एवं बुद्धिमत्ता का सुंदर संगम था। अपनी प्रजा के सुख के लिए उन्होंने राज्य में अनेक महत्वपूर्ण कार्य करवाए तथा अपनी प्रजा का हृदय जीत लिया। जबलपुर के निकट रानीताल नामक भव्य जलाशय बनवाया। उसकी पहल से प्रेरित होकर उन्होंने अनुयायियों ने चेरीताल का निर्माण किया तथा आधार कायस्थ ने जबलपुर से 3 मील की दूरी पर आधार ताल का निर्माण किया। उसने अपने राज्य में अध्ययन को बढ़ावा दिया।

आक्रमणकारी बाज़ बहादुर जैसे शक्तिशाली राजा को युद्ध में हराना–राजा दलपतशाह के निधन उपरांत कुछ शत्रुओं की कुदृष्टि इस समृद्धशाली राज्य पर पड़ी। मालवा के मांडलिक राजा बाज़ बहादुर ने विचार किया कि हम दिन में गोंडवाना को अपने अधिकार में ले लेंगे। उसने बड़ी आशा से गोंडवाना पर आक्रमण किया। परंतु रानी ने उसे पराजित कर दिया। उसका कारण था रानी का संगठन चातुर्य। रानी दुर्गावती द्वारा बाज़ बहादुर जैसे शक्तिशाली राजा को युद्ध में हराने से उनकी कीर्ति सर्वत्र फैल गई। सम्राट अकबर के कानों तक बात पहुँची तो वह चकित हो गया। रानी का साहस और पराक्रम देखकर उसके प्रति आदर व्यक्त करने के बहाने। अपनी राज्यसभा के दो विद्वान गोप महापात्र तथा नरहरी महापात्र को रानी की राज्यसभा में भेज दिया। रानी ने उन्हें आदर तथा पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इससे अकबर ने सन् 1540 में वीरनारायण सिंह को राज्य का शासक स्वीकार किया। इस प्रकार से शक्तिशाली राज्य से मित्रता बढ़ने लगी। रानी तलवार की अपेक्षा बंदूक का प्रयोग अधिक करती थीं। बंदूक से लक्ष्य साधने में वह अधिक दक्ष थीं। एक गोली एक बलि, ऐसी उनकी आखेट की पद्धति थी। रानी दुर्गावती राज्य कार्य सँभालने में बहुत चतुर, पराक्रमी और दूरदर्शी थीं।

अकबर का सेनानी तीन बार रानी से पराजित–अकबर ने वर्ष 1563 में आसफ़ खाँ नामक बालाक्ष्य सेनानी को गोंडवाना पर आक्रमण करने भेज दिया। वह समाचार मिलते ही रानी ने अपनी व्यूह-रचना आरंभ कर दी। सर्वप्रथम अपने विश्वसनीय दूतों द्वारा अपने मांडलिक राजाओं तथा सेना नायकों को सावधान हो जाने की सूचनाएँ भेज दीं। अपनी सेना की कुछ टुकड़ियों को घने जंगल में छुपाए रखा और शेष को अपने साथ लेकर रानी निकल पड़ी। रानी ने सैनिकों का मार्गदर्शन किया। एक पर्वत की तलहटी पर आसफ़ खाँ और रानी दुर्गावती का सामना हुआ। बड़े आवेश से युद्ध हुआ। मुग़ल सेना विशाल थी। उसमें बंदूकधारी सैनिक अधिक थे। इस कारण रानी के सैनिक मरने लगे। परंतु इतने में जंगल में छिपी सेना ने अचानक धनुष-बाण से आक्रमण कर, बाणों की वर्षा कर दी। इससे मुग़ल सेना को भारी क्षति पहुँची और

रानी दुर्गावती ने आसफ़ खाँ को पराजित किया। आसफ़ खाँ ने 1 वर्ष की अवधि में 3 बार आक्रमण किया और तीनों ही बार पराजित हुआ।

गोंडवाना की स्वतंत्रता के लिए आत्मबलिदान देने वाली रानी–अंत में वर्ष 1564 में आसफ़ खाँ ने सिंगौरगढ़ पर घेरा डाला परंतु रानी वहाँ से भागने में सफल हुई, यह समाचार पाते ही आसफ़ खाँ ने रानी का पीछा किया। पुनः युद्ध आरंभ हो गया। दोनों ओर से सैनिकों को भारी क्षति पहुँची। रानी प्राणों पर खेलकर युद्ध कर रही थीं। इतने में रानी के पुत्र वीरनारायण सिंह के घायल होने का समाचार सुनकर सेना में भगदड़ मच गई। सैनिक भागने लगे। रानी के पास केवल 300 सैनिक थे। उन्हीं सैनिकों के साथ रानी स्वयं घायल होने पर भी आसफ़ खाँ से शौर्य से लड़ रही थीं। उनकी अवस्था और परिस्थिति देखकर सैनिकों ने उन्हें सुरक्षित स्थान पर चलने की विनती की। परंतु रानी ने कहा–"मैं युद्धभूमि छोड़कर नहीं जाऊँगी, इस युद्ध में मुझे विजय अथवा मृत्यु में से एक चाहिए।" अंत में घायल तथा थकी हुई अवस्था में उन्होंने एक सैनिक को पास बुलाकर कहा–"अब हमसे तलवार घुमाना असंभव है परंतु हमारे शरीर का नख शत्रु के हाथ न लगे, यही हमारी अंतिम इच्छा है। इसलिए आप भाले से हमें मार दीजिए। हमें वीर मृत्यु चाहिए और वह आप हमें दीजिए।" परंतु वह सैनिक साहस न कर सका तो रानी ने स्वयं ही अपनी तलवार गले पर चला ली। वह दिन था 24 जून 1564 का। इस प्रकार रानी युद्ध-भूमि पर गोंडवाना के लिए अर्थात् अपने देश की स्वतंत्रता के लिए अंतिम क्षण तक जूझती रहीं। गोंडवाना पर वर्ष 1548 से 1564 अर्थात् 16 वर्ष तक रानी दुर्गावती का आधिपत्य था, जो मुग़लों ने नष्ट किया। इस प्रकार महान, पराक्रमी रानी दुर्गावती का अंत हुआ। इस महान वीरांगना को हमारा शत-शत प्रणाम।

संदर्भ ग्रंथ

- गढ़ा के गोंड राज्य, डॉ. सुरेश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2008
- रानी दुर्गावती, डॉ. सुरेश मिश्र, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2012
- सतपुड़ा पर्वतमाला के राजगोंड महाराजा, सी.यू. विलसन, अनुवादक–डॉ. सुरेश मिश्र, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2018

• प्रेरणा पथ, नवंबर-दिसंबर, 2017, रानी दुर्गावती विशेषांक, विद्या भारती महाकौशल प्रांत, जबलपुर।